Lecture No (05)

Name of the College. A.P.S. M College, Barauni, Begusarai
L.N.M.V. Darbhanga.

Name - Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt - A.I.H. & C

Lession - Plan for class B.A. Part II (H) paper IV

Date - 26-06-2021

Name of the Topic — Brindeshwar temple of Tanjore

वृहदेश्वर मंदिर (तंजोर) का शेष भाग II शैव मंदिर होने के कारण वृहदेश्वर मंदिर की दीवारे शिव के विभिन्न कार्यों के प्रदर्शन से सुशोभित है। अनुग्रह तथा रौद्र भाव की प्रतिमाएँ खुदी है। शिव - परिवार का भी अंकन मिलता है। देवी तथा विष्णु की मूर्तियों को भी स्थान दिया गया है। दीवारों की भाग पर शिव की नाना भावयुक्त प्रतिमाएँ शैवमत की प्रधानता बतलाती है। राजेन्द्र चोल

के शासन के पश्चात् साम्राज्य की विस्तार-योजना प्रायः समाप्त हो गई। मंदिर - निर्माण कार्य का ह्रास होता गया। इस अवनति काल में भी कुम्भकोनम् के समीप ही दो मंदिर बने थें।

① दारासुरम् का ऐरावतेश्वर और
② त्रिभुवनम् का त्रिभुवनेश्वर मंदिर। इन मंदिरों की

अवस्था हीन होती चली गई। इनमें अलंकार तथा आभूषणों का अधिक प्रयोग मिलता है। बारहवीं सदी में चोल की हीनावस्था में जिन मंदिरों का निर्माण हुआ। उन्हे उत्तर-चोलयुग की कृति कहने में अत्युक्ति न होगी। P.T.O.

Scanned with CamScanner

की नी .११ (५)

(2)

चोल की अवनति के बाद पांड्य राजाओं ने दक्षिण पर शासन किया। उनके प्रभुत्व का बोलबाला होने पर चोल शैली के ही वर्तमान मंदिरों की बनावट पुराने स्थापत्य शैली की ही है। इनमें विमान वृहद, छोटे गए। विमान तथा मंडप के चारों तरफ अनेक गोपुर मंदिर बने है, जो सभी चहारदीवारी के भीतर स्थित है। समकेन्द्रित परकोटा में गोपुरम वर्तमान है। इसमें गर्भगृह के सम्मुख एक निर्मित मंडप रथ के आकार का बना है। जिसे घोड़ी खींच रहे है। इसी कारण मंदिर को ऐरावतेश्वर नाम दिया गया है। इस युग में मुख्य मंदिर को छोड़ कर गोपुरमंडल कक्ष, पर छोटे मंदिरों पर अधिक ध्यान दिया गया। यही कारण है कि कालांतर में गोपुरम विशालतर हो गया तथा गर्भगृह का ने छोटे आकार का रूप धारण कर लिया। इस मंदिर की बाहरी दीवार की ताख पर तंजौर तथा गंगैकोण्डचोलपुरम मंदिरों के सदृश मूर्तियाँ उकेरी गई है। इसमें दोहरा स्तंभ निर्मित है। जिनकी मध्य में सिंहयुक्त कुंड बनाये गये थे। परकोटे की दीवार भीतर मंडप कक्ष के सुंदर शोभा पड़ती है। मंडप के अग्र भाग नटराज - सभा के नाम से प्रसिद्ध है। इस मंदिर की ताख में देवियों की आकृतियाँ ~~शांति~~ एवं पूर्णांति का संदेश दे रही है। परन्तु तंजौर के मंदिर में ~~वीरोचित~~ भाव प्रकट होते है। चोल युग में संगीत तथा नृत्य को पोषक सभी नरेश थे। इसकारण मंदिरों में संगीत-वाद्य यन्त्र तथा पोषक सभी नरेश थे। इस कारण मंदिरों में संगीत-वाद्य तथा नृत्य का प्रचूर उपदर्शित है। चिदंबरम के भीतर में
चिदंबरम के मंदिर के ~~मंदिर~~ संगीत का वाद्य नृत्य का प्रचूर प्रदर्शित है

भूदेवी और लक्ष्मी की प्रतिमाएँ हैं। वीरभद्र, दक्षिणामूर्ति कालांतक तथा नटेश मूर्तियाँ शैवधर्म की प्रधानता बतलाती हैं। हरिहर, अर्द्धनारीश्वर, चन्द्रशेखर, गंगाधर तथा आलिंगन चंद्रशेखर की प्रतिमाएँ शैवमत की प्रमुखता के द्योतक हैं। सरस्वती, महिषमर्दिनी आदि देवियों की मूर्तियाँ भी दूसरी पंक्ति में बनी हैं।

पूर्वी भाग में सीढ़ियों द्वारा मंदिर में प्रवेश करते हैं। उसके बाद स्तंभयुक्त मंडप बना है। प्रवेशद्वार के ऊपर पास-पास दो गोपुरम बने हैं पहला विशाल है, किन्तु दूसरा अधिक अलंकृत है। दूसरे गोपुरम के प्रारंभ में दो द्वारपाल रक्षा कर रहे हैं। उस पर शिव की जीवनलीलाओं का दृश्यांकन है शिव-पार्वती विवाह, मार्कण्डेय की रक्षा, अर्जुन को पाशुपतास्त्र का दान, आदि प्रदर्शित दिख पड़ते हैं। गर्भगृह के समीप का स्थान अंधकारमय है, किन्तु तक्षण कला के सुंदर नमूने खुदे हैं। इसके पश्चिम वाहमध्य विष्णु, दक्षिण में शिव नटराज, त्रिशूल तथा तलवार सहित, भयंकर चेहरा, दसभुजी शिव एवं उत्तर दिशा में पर भगवती देवी प्रतिमाएँ मंदिर की शोभा बढ़ा रही हैं। नटराज प्रतिमा में पल्लव की परंपरा विद्यमान है। चोल युग के सर्वोत्तम कलात्मक दृष्टांत एक सौ आठ नृत्य-मुद्रा के प्रदर्शन से मिलते हैं। यह मंदिर की पहली मंजिल की दीवार पर खुदे हैं। इस प्रदर्शन से भारतीय संगीतकला का उत्तम इतिहास ज्ञात हो जाता है। संभवतः चिदंबरम के गोपुरम पर नृत्य-मुद्राओं का बृहदेश्वर मंदिर का प्रदर्शन पूर्ण रूप ही माना जा सकता है।

तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली जिले में नगर से इक्यानवे किलोमीटर दूर पूर्व तथा तंजौर से छप्पन किलोमीटर उत्तर-पूर्व की कृति कहने में अत्युक्ति न होगा। P.T.O.

की और गंगैकोंडा चोलपुरम नामक स्थान है। जिस पर राजेन्द्र चोल प्रथम (ई.स : 1012-44) ने वृहदेश्वर भगवान का दूसरा मंदिर बनवाया था। यह गंगैकोंडा चोलीश्वर नाम से भी विख्यात है। चोलनरेश ने उत्तरी भारत में गंगा घाटी तक विजय करने के स्मारक में इस मंदिर का निर्माण किया था। उस स्थान के भग्नावशेष मंदिर के गौरव की कहानी सुनाते हैं। भीतरी परकोटे की दीवार का गोपुरम भी नष्टप्राय हो जाता है। बाहरी दीवार का गोपुरम दीख नहीं पड़ता। यह मंदिर भी तंजौर मंदिर की योजना के सदृश तैयार किया गया है। यह मंदिर भी तंजौर मंदिर की योजना के सदृश तैयार किया गया। यह मंदिर 340 फुट लंबा तथा 110 फुट चौड़ा आयताकार विशाल आँगन में निर्मित हुआ। जिसमें 175 x 95 वर्ग फुट क्षेत्रफल में महामण्डप बना है तथा उसका विमान सौ फुट ऊँचा है। पूर्वी भाग में प्रवेशद्वार है जिसके दोनों तरफ दो विशालकाय द्वारपाल है। ~~महामंडप~~ स्तंभ चार फुट ऊँचा नहीं है जिसमें डेढ़ सौ महामंडप अधिक ऊँचा चबूतरे पर खड़े हैं विद्वानों का मत है कि द्राविड़ शैली के सह प्रस्तमावति सहित मंडप का पूर्व रूप ~~आते~~ है, यहाँ गर्भगृह गंगैकोंडाचोलपुरम के महामंडप में ~~आते~~ हैं। दो पंक्तियों में ~~खड़े~~ तथा मंडप को जोड़ने वाले कक्ष में दो पंक्तियों में 160 फुट ऊँचा है। इस पाया खड़े है। इसका विमान अलंकरण है कि बाउन चोल मंदिर में इतने अधिक शृंगारिक मानता है तथा पूर्व ने इनको नारीवत यानी शृंगारिक का द्योतक है, के वृहदेश्वर मंदिर पुरुष शक्ति स्थापत्य शैली का समझते। इन मंदिरों को द्रविड़ स्थापत्य शिल्प की उत्कृष्ट नमूना कह सकते हैं। स्थापत्य मंदिरों के अद्भुत गरिमा का परिज्ञान वृहदेश्वर से तो हो जाता है।

भारती कुमारी
A.D.H.S.C
Date — 26-06-2021